विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। –रामदास

अहिंसक सिल्क : करुणा से बुना रेशम

रेशम को सदियों से सुंदरता, समृद्धि, शालीनता और भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना जाता रहा है। विवाह समारोहों, धार्मिक आयोजनों और उत्सवों में रेशमी वस्त्रों का विशेष महत्त्व है। लेकिन इस चमकदार वस्त्र के पीछे एक ऐसी सच्चाई भी छिपी है, जिस पर सामान्यत: हमारा ध्यान नहीं जाता। पारंपरिक रेशम के उत्पादन में रेशम के कीड़ों को उनके कोकून के भीतर ही मार दिया जाता है, ताकि एक लंबा और अखंड धागा प्राप्त किया जा सके। जीवों के प्रति करुणा और अहिंसा में विश्वास रखने वाले लोगों के लिए यह गंभीर विचार का विषय है। इसी समस्या का संवेदनशील समाधान है–अहिंसक सिल्क, अर्थात् अहिंसा रेशम या पीस सिल्क।यह केवल वस्त्र बनाने की एक वैकल्पिक तकनीक नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व और जीव मात्र के प्रति संवेदना का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के 123वें एपिसोड में मेघालय के एरी सिल्क की सराहना करते हुए इसे अहिंसा सिल्क बताया था। उन्होंने इस रेशम की विशेषताओं, पर्यावरण के अनुकूल स्वरूप और स्थानीय लोगों की आजीविका में इसके योगदान की ओर ध्यान आकर्षित किया। प्रधानमंत्री का संदेश था कि देशवासी स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर 'वोकल फॉर लोकल' और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को मजबूत कर सकते हैं। एरी सिल्क की चर्चा ने यह अवसर दिया है कि हम भारतीय दर्शन में निहित अहिंसा के सिद्धांत को अपने दैनिक जीवन और उपभोग की आदतों से जोड़कर देखें।

पारंपरिक रेशम बनाने की प्रक्रिया में जब रेशम का कीड़ा अपने चारों ओर रेशमी धागे से कोकून बना लेता है, तब सामान्यत: कोकून को गर्म पानी में डालकर कीड़े को मार दिया जाता है। ऐसा करने से धागा एक लंबे, अखंड रेशे के रूप में प्राप्त होता है, जिसे रील पर लपेटकर रेशम का धागा बनाया जाता है। इसके विपरीत, अहिंसक सिल्क के उत्पादन में कीड़े को अपना प्राकृतिक जीवन-चक्र पूरा करने दिया जाता है। जब वह पतंगे के रूप में कोकून से बाहर निकल जाता है, तब खाली कोकून से रेशम प्राप्त किया जाता है। बाहर निकलने के कारण धागा टूट जाता है, इसलिए उसे सामान्य रेशम की तरह सीधे रील पर नहीं लपेटा जा सकता। छोटे रेशों को साफ करके, कातकर और आपस में जोड़कर धागा बनाया जाता है। इस प्रक्रिया में अधिक श्रम और समय लगता है, लेकिन इसके पीछे एक महत्त्वपूर्ण नैतिक विचार है–वस्त्र की सुंदरता के लिए किसी जीव का जीवन छीनना आवश्यक नहीं होना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में अहिंसा का विचार अत्यंत प्राचीन है। जैन दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च धर्म माना गया है। भगवान महावीर का संदेश केवल मनुष्य के प्रति सद्व्यवहार तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक जीव के प्रति संवेदनशीलता और उसके अस्तित्व के सम्मान की प्रेरणा देता है। बौद्ध दर्शन भी करुणा और प्राणीमात्र के प्रति मैत्री पर बल देता है। अहिंसक सिल्क इन आदर्शों को व्यवहार में उतारने का एक उदाहरण है। यदि हम भोजन, वस्त्र और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के चयन में भी अनावश्यक हिंसा को कम करने का प्रयास करें, तो अहिंसा केवल उपदेश या धार्मिक अनुष्ठान का विषय न रहकर जीवन-पद्धति बन सकती है।

अहिंसक सिल्क के विभिन्न प्रकारों में एरी सिल्क का विशेष स्थान है। इसका उत्पादन असम और मेघालय सहित पूर्वोत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में लंबे समय से होता आया है। एरी रेशम की विशेषता यह है कि पतंगे को कोकून से बाहर निकलने दिया जाता है। इसकी बनावट अपेक्षाकृत मुलायम, गर्म और ऊनी एहसास वाली होती है। यह सर्दियों में गर्माहट देने के साथ आरामदायक वस्त्र बनाने के लिए उपयोगी है। इसकी पारंपरिक उत्पादन-प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों का ज्ञान और कौशल शामिल है। मेघालय में खासी समुदाय सहित विभिन्न स्थानीय समूहों ने इस परंपरा को पीढ़ियों से आगे बढ़ाया है। एरी सिल्क को मिला भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग इसकी क्षेत्रीय पहचान और पारंपरिक विरासत के महत्त्व को रेखांकित करता है।

आज दुनिया में ऐसे उत्पादों के प्रति रुचि बढ़ रही है, जिनके निर्माण में पशु-क्रूरता कम हो और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाई जाए। इस बदलती सोच के बीच अहिंसक सिल्क भारत की सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक बाजार की आवश्यकताओं से जोड़ सकता है। सरकार, सहकारी संस्थाओं, डिजाइनरों, बुनकरों और उपभोक्ताओं को मिलकर इसके उत्पादन तथा विपणन को प्रोत्साहित करना चाहिए।

अहिंसक विधि से टसर और शहतूती रेशम भी तैयार किया जा सकता है। टसर रेशम अपनी प्राकृतिक सुनहरी-भूरी आभा और विशिष्ट बनावट के लिए जाना जाता है, जबकि शहतूती रेशम में अपेक्षाकृत अधिक चमक हो सकती है। हालांकि, केवल रेशम के प्रकार के आधार पर उसे अहिंसक नहीं कहा जा सकता। वास्तविक महत्त्व उस उत्पादन-विधि का है, जिसमें कीड़े को कोकून से प्राकृतिक रूप से बाहर निकलने दिया जाता है। इसलिए उपभोक्ताओं को खरीदारी के समय उत्पाद की वास्तविक जानकारी, विश्वसनीय स्रोत और प्रमाणन पर ध्यान देना चाहिए। बाजार में किसी वस्त्र पर 'पीस सिल्क' या 'अहिंसा सिल्क' लिखा होना अपने आप में उसकी प्रामाणिकता का पर्याप्त प्रमाण नहीं है।

इस रेशम का महत्त्व केवल जीवों की रक्षा तक सीमित नहीं है। इसके उत्पादन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था, हथकरघा उद्योग और स्थानीय कारीगरों को भी लाभ मिल सकता है। विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत में महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से रेशम उत्पादन, कताई, बुनाई और वस्त्र निर्माण में योगदान दे रही हैं। यदि इन उत्पादों के लिए उचित बाजार, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और उपभोक्ताओं का समर्थन उपलब्ध हो, तो महिलाओं की आय तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ सकती है। स्थानीय परंपराओं को संरक्षित रखते हुए रोजगार के अवसर पैदा करना इस उद्योग की एक बड़ी संभावना है।

छत्तीसगढ़ ने भी अहिंसा के संदेश को रोजगार और पारंपरिक रेशम उत्पादन से जोड़ते हुए एक अनूठी पहल की है। प्रदेश में अहिंसक विधि से तैयार रेशमी साड़ियों को 'सीजी एरी' ब्रांड के अंतर्गत बाजार में लाने की पहल की जा रही है। इसकी विशेषता यह है कि रेशम प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले तसर कोकून से पतंगे को प्राकृतिक रूप से बाहर निकलने दिया जाएगा। इसके बाद खाली कोकून से रेशम का धागा तैयार कर साड़ियाँ बुनी जाएँगी। इस प्रक्रिया में जीव की हत्या किए बिना रेशम उत्पादन को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जा रहा है। यह पहल दर्शाती है कि अहिंसा का सिद्धांत केवल धार्मिक और नैतिक उपदेश तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे रोजगार सृजन, स्थानीय कारीगरों की आजीविका और पारंपरिक हस्तशिल्प के विकास से भी जोड़ा जा सकता है। यदि इस पहल को उचित बाजार, प्रशिक्षण और उपभोक्ताओं का समर्थन मिलता है, तो इससे बुनकरों और ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ की पारंपरिक रेशम कला को नई पहचान मिल सकती है।

पर्यावरण की दृष्टि से भी अहिंसक सिल्क संभावनाएं प्रस्तुत करता है। इसमें कोकून को उबालने की प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती, जिससे उत्पादन के कुछ चरणों में ऊर्जा की बचत हो सकती है। हालांकि, किसी भी वस्त्र का वास्तविक पर्यावरणीय प्रभाव उसके उत्पादन, रंगाई, प्रसंस्करण, परिवहन और टिकाऊपन पर भी निर्भर करता है। इसलिए अहिंसक सिल्क को पर्यावरण के लिए स्वत: पूर्णत: हानिरहित मानने के बजाय उसके पूरे उत्पादन-चक्र का मूल्यांकन करना उचित होगा। इसकी एक प्रमुख चुनौती लागत है। टूटे हुए रेशों से धागा तैयार करने में अतिरिक्त श्रम लगता है, जिससे वस्त्र महंगे हो सकते हैं। व्यापक स्वीकार्यता के लिए गुणवत्ता, उचित मूल्य, पारदर्शी प्रमाणन और बाजार तक बेहतर पहुंच आवश्यक है।

आज दुनिया में ऐसे उत्पादों के प्रति रुचि बढ़ रही है, जिनके निर्माण में पशु-क्रूरता कम हो और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाई जाए। इस बदलती सोच के बीच अहिंसक सिल्क भारत की सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक बाजार की आवश्यकताओं से जोड़ सकता है। सरकार, सहकारी संस्थाओं, डिजाइनरों, बुनकरों और उपभोक्ताओं को मिलकर इसके उत्पादन तथा विपणन को प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही, उपभोक्ताओं को केवल आकर्षक नाम या विज्ञापन के आधार पर नहीं, बल्कि विश्वसनीय जानकारी के आधार पर उत्पाद चुनना चाहिए।

अंतत: अहिंसक सिल्क हमें एक गहरा संदेश देता है कि सुंदरता और करुणा एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। परंपरा को बनाए रखते हुए उसमें मानवीय संवेदना का समावेश किया जा सकता है। यदि हम ऐसे वस्त्र को प्राथमिकता दें, जिसकी तैयारी में रेशम के कीड़े को अपना जीवन पूरा करने का अवसर मिलता है, तो हमारा चुनाव एक व्यापक नैतिक दृष्टिकोण का हिस्सा बन सकता है। जैन दर्शन का 'जियो और जीने दो' केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि जीवन के प्रति जिम्मेदार दृष्टि है। अहिंसक सिल्क इसी दृष्टि को व्यवहार में उतारने का एक सार्थक प्रयास है–ऐसा रेशम, जिसकी सुंदरता केवल उसकी चमक में नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपी करुणा में भी दिखाई देती है।

–अतिथि सम्पादक,
प्रोफेसर (डा.) पी. सी. कंठालिया
पूर्व विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञान) एवं मुख्य वैज्ञानिक
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान में राजस्थान प्रथम, पीएम जनमन में उत्कृष्ट उपलब्धि

सीएम भजनलाल शर्मा जनजाति वर्ग के समग्र उत्थान के लिए कर रहे हर सम्भव प्रयास



नंदिनी भार्गव

आजादी से कुछ साल पहले तक देशभर के जनजाति बहुल क्षेत्र विकास की मुख्यधारा तो क्या, सहायक धारा में भी शामिल नहीं थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने इस सच्चाई को गहराई से समझा कि भारत की आत्मा उसकी जनजातियों में बसती है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान और प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम जनमन) अभियान इसी वर्ग की सेवा और सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इन दोनों अभियान को अपनी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल किया, राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के फंड से इनमें कन्वर्जेंस किया व गुड गवर्नेंस के प्रत्येक मानक की अक्षरश: पालना सुनिश्चित कर राज्य के जनजाति वर्ग व जनजाति बहुल क्षेत्रों का समग्र विकास सुनिश्चित किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2024 को हजारीबाग से DAJGUA का शुभारम्भ किया। मिशन के तहत 5 साल में 79,156 करोड़ रुपये के बजट के साथ 30 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के 549 जिलों के 2,740 ब्लॉकों में 63,843 से अधिक आदिवासी बाहुल्य वाले गांवों को विकास से संतृप्त करना है। इससे 5 करोड़ से अधिक जनजातीय व्यक्ति लाभान्वित हो रहे हैं। राजस्थान के 37 जिलों के 209 ब्लॉक के 6235 ग्रामों को विकसित किया जाना लक्षित किया गया है। धरती आभा अभियान का मकसद अपने अधिकारों और सरकारी योजनाओं के प्रति जनजातीय समुदायों तक जागरूकता और पहुंच बढ़ाकर उनका सशक्तीकरण सुनिश्चत करना है।

इस योजना में 25 कार्यक्रम शामिल हैं, जिनका क्रियान्वयन 17 मंत्रालयों द्वारा किया जा रहा है। समस्त पात्र परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) अन्तर्गत पक्के मकान , प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अन्तर्गत चिन्हित ग्रामों को संपर्क सड़क से जोड़ना, जल जीवन मिशन में चिन्हित ग्रामों में प्रत्येक परिवार को जल आपूर्ति, 20 परिवारों से अधिक आबादी वाली बस्तियों को सामुदायिक जल नल से जोड़ना, चिन्हित ग्रामों में प्रत्येक अविद्युतिकृत परिवार एवं सार्वजनिक संस्थान को गृह विद्युतिकरण से जोड़ना, प्रत्येक अविद्युतिकृत परिवार एवं सार्वजनिक संस्थान, जो ग्रिड के माध्यम से कवर नहीं हैं, को ऑफ ग्रिड सोलर से जोड़ना, चिन्हित गांवों में स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये पहाड़ी क्षेत्रों में 5 किमी. तथा मैदानी क्षेत्रों में 10 किमी से अधिक दूरी पर स्वास्थ्य सुविधाएं वाले ग्रामों में मोबाइल मेडीकल युनिट लगाये जाने तथा प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अन्तर्गत प्रत्येक पात्र परिवार को आयुष्मान कार्ड उपलब्ध कराये जाने के प्रावधान किये गये हैं। चिन्हित गांवों में पात्र परिवारों को प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना अन्तर्गत एलपीजी गैस पोषण अभियान अन्तर्गत 567 सक्षम आंगनवाड़ी सेन्टर्स के उन्नयन व निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। समग्र शिक्षा अभियान के तहत ऐसे ग्राम, जिनमें 5 किमी. की परिधि के भीतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय नहीं हैं, उन ग्रामों हेतु छात्रावासों के निर्माण का लक्ष्य है।

राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत पोषण वाटिकाओं का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। चिन्हित ग्राम, जो अन्यथा किसी मोबाइल नेटवर्क से नहीं जुड़े हैं, को बीएसएनएल से जोड़ा जा रहा है। स्किल इण्डिया मिशन के तहत कौशल विकास केन्द्र स्थापना, वन धन विकास केन्द्र स्थापना एवं जनजातीय समूह आदि को प्रशिक्षित करना, डिजीटल इण्डिया मिशन के लक्ष्य अनुरूप समस्त लाभार्थियों को लाभान्वित किया जाना है। टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने हेतु राज्य के वनाधिकार पट्टा धारकों में से पात्र किसानों को विभाग की विविध योजनाओं में लाभान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित है। मत्स्य सम्पदा योजनान्तर्गत मछली पालन सहायता हेतु तथा राष्ट्रीय पशुधन मिशन अन्तर्गत पशुधन पालन हेतु राज्य के वनाधिकार पट्टा धारकों में से पात्र पशुपालक / मछुआरों को लाभान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के तहत वनाधिकार से संबद्ध समस्त ग्राम सभाओं, उपखण्ड, जिला व राज्य स्तर के अधिकारियों की कपैसिटी बिल्डिंग हेतु लक्ष्य निर्धारित किया गया है। स्वदेश दर्शन के तहत ट्राइबल होम स्टे का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस हेतु नये निर्माण पर प्रति इकाई 5 लाख व नवीनीकरण हेतु 3 लाख का प्रावधान किया गया है।

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा आश्रम छात्रावासों एवं आवासीय विद्यालयों का उन्नयन एवं सुधार, जनजातीय बहुउद्देशीय विपणन केन्द्रों की स्थापना, सिकल सेल रोग निदान के लिए परामर्श एवं जागरूकता हेतु सेंटर ऑफ कॉम्पीटेंस की स्थापना, वनाधिकार दावों की प्रक्रिया के सपोर्ट एवं डिजीटलीकरण हेतु एफ. आर. ए. सेल की स्थापना जैसी महत्वपूर्ण पहल की जा रही है।

अभियान के तहत आश्रम छात्रावासों एवं आवासीय विद्यालयों के निर्माण, उन्नयन एवं सुधार हेतु राशि रु.340.59 करोड़ के अनुमोदित कार्यों के लिए 350.12 करोड़ रू. की स्वीकृति जारी की जा चुकी है, जिनमें से अधिकांश कार्य निर्माणाधीन हैं।

वनाधिकार हेतु 18 जिलों एवं राज्य स्तर पर कुल 19 वनाधिकार प्रकोष्ठ गठन हेतु 3.45 करोड़ रू. का अनुमोदन किया गया है। जिला उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, बारां व सिरोही में जनजाति बहुउद्देशीय विपणन केन्द्र हेतु 6.00 करोड़ रू. की स्वीकृति जारी की गई है। सिकल सेल रोग निदान के लिए परामर्श एवं जागरूकता हेतु आरएनटी मेडीकल कॉलेज, उदयपुर में णहीू र्द ण्दस्ज्ाूहम की स्थापना हेतु 3.10 करोड़ रू.का अनुमोदन किया गया है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत ही केन्द्र सरकार द्वारा आदि कर्मयोगी अभियान चलाया गया, जिसके अन्तर्गत प्रथम चरण में 26 जिलों को चयनित किया गया, जिसमें 8 राज्य मास्टर ट्रैनर्स, 162 जिला मास्टर ट्रैनर्स, 1,082 ब्लॉक मास्टर ट्रैनर्स तथा 1,16,670 ग्राम स्तरीय आदि कर्मयोगियों, आदि सहयोगियों व आदि साथियों को प्रशिक्षित किया गया।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अन्तर्गत दिनांक 15 जून, 2025 से 15 जुलाई, 2025 तक धरती आबा जन भागीदारी अभियान चलाया गया गया। जनजाति बहुल क्षेत्रों में विकास कार्य व सरकारी सेवाओं की समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने, शिकायत निवारण प्रणाली को पूर्ण प्रभावी बनाने और जनजाति वर्ग के अधिकारों की अक्षरश: पालना, उनके कल्याण और उत्थान के मामले में राजस्थान देश में नम्बर 1 पर है।

राजस्थान की विशेष उपलब्धि–

राजस्थान में जनजाति वर्ग के कल्याण के लिए टीएसपी फंड को 1000 करोड़ रूपये से बढ़ाकर 1,500 करोड़ रुपये किया है। सामुदायिक वनाधिकार क्षेत्रों के विकास पर केंद्रित गोविंद गुरु जनजातीय क्षेत्रीय विकास योजना प्रारंभ की है। 250 नवीन मां-बाड़ी केंद्रों की स्थापना। अशोक लीलैंड प्रशिक्षण केंद्र, रेलमगरा में 25 युवाओं को भारी वाहन चालक का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया गया। डूंगरपुर, बांसवाड़ा और उदयपुर में जनजाति नायकों के स्मारक और वीर बालिका काली बाई संग्रहालय का निर्माण, बारां जिले में 17 मल्टीपरपज केंद्र महत्वपूर्ण कदम है। सीताबाड़ी, कमलनाथ महादेव और जावर माता मंदिर जैसे आस्था स्थलों पर आधारभूत सुविधाएं। 'जयकार प्रोग्राम' में उदयपुर के ईएमआरएस विद्यार्थियों ने अंतरिक्ष विज्ञान प्रशिक्षण प्राप्त किया। माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध संस्थान में 'बनफूल डिज़ाइन स्टूडियो' की स्थापना, पारंपरिक कला संरक्षण और विपणन। 'प्रोजेक्ट चितेरा' में छात्रावास और विद्यालयों में मांडना व पारंपरिक चित्रकला को पुनर्जीवित। एम्स, जोधपुर के सहयोग से आबूरोड (सिरोही) में सैटेलाइट सेंटर फॉर ट्राइबल हेल्थ एंड रिसर्च, 29 अक्टूबर, 2024 को प्रधानमंत्री द्वारा ड्रोन दवा आपूर्ति सुविधा का शुभारंभ। 'माई मिशन' कार्यक्रम में विद्यार्थियों को राजस्थान सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए नि:शुल्क कोचिंग



अनीशा सहारन

इस अभियान में उत्तम प्रगति के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राजस्थान को सम्मानित किया। अतिरिक्त मुख्य सचिव, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग कुंजीलाल मीणा ने यह सम्मान ग्रहण किया। इसी अभियान के तहत गत 18 मई से 25 मई तक ''जन भागीदारी – सबसे दूर, सबसे पहले'' का सफल आयोजन किया गया।

पीएम-जनमन से बारां की 149 ग्राम पंचायतों के 324 गांवों में सहरिया समुदाय तक मूलभूत सुविधाएं पहुंच रही है। 22 सड़कों का कार्य पूरा: अभियान के तहत प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के माध्यम से 14 हजार 671 आवासों का निर्माण पूरा हो चुका है। पीवीटीजी समुदाय के बच्चों और युवाओं के लिए 15 बहुउद्देश्यीय केन्द्र, 51 आंगनबाड़ी केन्द्र और 51 वन-धन केन्द्र संचालित किए हैं। दो छात्रावासों का निर्माण पूरा हो चुका है जबकि 19 अन्य छात्रावासों का कार्य जून 2027 तक पूरा करने का लक्ष्य है।

दूरस्थ क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाएं: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की आठ मोबाइल चिकित्सा इकाइयां जनजातीय क्षेत्रों में संचालित हैं। इनके माध्यम से अब तक 2 लाख 45 हजार से अधिक लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिला है।

–नंदिनी भार्गव-अनीशा सहारन

तनाव का सबसे बड़ा कारण--तुलना



गोविन्द शर्मा

आज के समय में सबसे बड़ी बीमारी कौन सी है? बुखार, जुकाम नहीं, बल्कि तनाव है। और तनाव का सबसे बड़ा कारण क्या है ? तुलना।

हम बचपन से ही तुलना करना सीख जाते हैं। ''देख शर्मा जी का बेटा कितने अच्छे नंबर लाया'', ''देख तेरी बहन कितनी सुंदर लगती है'' – यहीं से तुलना का बीज हमारे मन में बो दिया जाता है। यही बीज बड़ा होकर तनाव का पेड़ बन जाता। ईश्वर ने हर व्यक्ति को अलग बनाया है। किसी के पास सुंदर चेहरा है, किसी के पास सुंदर मन। कोई पढ़ाई में तेज है, कोई खेल में। पर हम सबको एक ही लाठी से हांकना चाहते हैं।

जब हम खुद की तुलना दूसरों से करते हैं, तो दो ही बातें होती हैं

खुद को छोटा समझना – जब हम देखते हैं कि दूसरा हमसे आगे है, ज्यादा कमाता है, ज्यादा सुंदर है, तो हमारे मन में हीन भावना आती है। लगता है ''मैं कुछ नहीं हूँ''। यही हीनत धीरे-धीरे तनाव, ईर्ष्या और दुख में बदल जाती है। और दूसरी बात दूसरे से खुद को बड़ा समझना – और जब हम खुद को दूसरों से बेहतर समझते हैं, तो अहंकार आता है। अहंकार भी एक तरह का तनाव ही है, क्योंकि हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं कोई मुझसे आगे न निकल जाए। इसलिए तुलना चाहे ऊपर से करो या नीचे से, तनाव दोनों तरफ है। पहले तुलना पड़ोस तक थी, अब सोशल मीडिया ने इसे पूरी दुनिया तक फैला दिया है। इंस्टाग्राम पर किसी की विदेश यात्रा देखकर लगता है ''मेरी जिंदगी बेकार है।'' फेसबुक पर किसी की नई कार देखकर नींद उड़ जाती है। हमें लगता है सब सुखी हैं, सिर्फ हम ही दुखी हैं। जबकि सच यह है कि लोग सिर्फ अपना अच्छा पक्ष दिखाते हैं।

ऑफिस में – ''उसका प्रमोशन कैसे हो गया?''

परिवार में – ''उसके बच्चे अमेरिका में हैं, मेरे क्यों नहीं?''

शरीर को लेकर – ''वो कितनी पतली है, मैं कितनी मोटी हूँ।''

हम हर समय एक अनदेखी दौड़ में भाग रहे हैं, जिसका कोई अंत ही नहीं।

तुलना से बचना बहुत जरूरी है, नहीं तो जीवन नरक बन जाएगा। इसके लिए तीन उपाय हैं। पहला – अपनी यात्रा को पहचानो – याद रखो, हर फूल अलग समय पर खिलता है। गुलाब जल्दी खिलता है, गेंदा देर से। पर दोनों की अपनी सुंदरता है।

आपकी जिंदगी आपकी है, उसकी तुलना किसी और से मत करो। दूसरा – आभार रखो – जो है, उसी में खुश रहना सीखो। रोज सुबह 5 चीजें गिनो जो आपके पास हैं – सेहत, परिवार, छत, भोजन, दोस्त। जब आभार आएगा, तुलना अपने आप चली जाएगी। तीसरा – प्रेरणा लो, तुलना नहीं – अगर कोई आपसे आगे है, तो उससे जलो मत, सीखो। सोचो ''अगर वो कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूँ।'' तुलना को ईर्ष्या नहीं, प्रेरणा बनाना चाहिए। यहां एक कहानी याद आई – एक कौआ बहुत दुखी था कि वह काला है। वह हंस के पास गया। हंस बोला मैं तोते से दुखी हूँ। तोता मोर से दुखी था। और मोर चिड़ियाघर में बंद होने से दुखी था और कौए जैसा आजाद होना चाहता था। मतलब हर कोई तुलना करके दुखी था।

यू कहना लाज़मी होगा कि ''तुलना चोर है, जो आपकी खुशी चुरा लेती है।'' खुद से प्रतिस्पर्धा करो। कल से बेहतर बनो। दूसरों की लकीर छोटी करने के बजाय, अपनी लकीर बड़ी करिये। तभी तनाव खत्म होगा और जीवन में सच में ''कुछ पल सकून से'' मिल पाएंगे।

–गोविन्द शर्मा,
से.नि सहायक निदेशक डी
आई पी आर (राज)

परिवारवाद एवं जातिवाद प्रजातंत्र के लिए घातक



कैलाश सोडानी

वैश्विक परिदृश्य में अलग-अलग देशों में भिन्न-भिन्न तरह की राजसत्ता के माध्यम से शासन व्यवस्था संचालित हो रही है। हर एक में अलग-अलग गुण-दोष है। समय और परिस्थितियों के अनुसार एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुसार राजसत्ता का स्वरूप बनता, बिगड़ता एवं परिवर्तित होता रहता है। भारत ने 1947 की आजादी के साथ ही सैकड़ों वर्षों से संचालित परिवारवाद को छोड़ते हुए प्रजातांत्रिक व्यवस्था से शासन व्यवस्था का निणय्र लिया। जिससे देश के समस्त नागरिक समान अधिकार एवं कर्तव्यों के साथ एक ही छाते के नीचे आ गये।

आजादी से पहले सैकड़ों वर्षों से समाज की व्यवस्था परिवारवाद एवं जातिगत संरचना से संचालित हो रही थी। न केवल सामाजिक अपितु आर्थिक एवं अन्य गतिविधियों का संचालन भी परिवार एवं जाति के आधार पर होता था। व्यक्ति का रोजगार और कार्य परिवार एवं जाति से निर्धारित होता था। तत्कालीन परिस्थितियों में शायद यही सामाजिक संरचना ठीक रही होगी। इस विषय पर हम आज चर्चा नहीं कर रहे हैं। सत्ता का स्वरूप कैसा भी हो, परन्तु राज सिंहासन पर बैठने वाले व्यक्ति को बुद्धिमान, अनुभवी एवं कुशल प्रबन्धक तो होना ही चाहिये। ज्ञान एवं अनुभव की पाठशाला में वर्षों तक तपस्या करनी होगी, तभी जाकर राज करने की कला से वाकिफ होंगे। त्रेता युग में श्री राम ने गुरु विश्वामित्र एवं द्वापर में अर्जुन ने गुरु द्रोणाचार्य के गुरुकुल में रहकर ही राजकाज के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया। कहने का मतलब यह है कि किसी श्रीमान का पुत्र होने मात्र से राजसिंहासन पर बैठने की योग्यता नहीं आ जाती। सौभाग्य से आजादी के लिए संघर्ष करने वाले एवं प्रजातंत्र की जाजम बिछाने वाले महात्मा गांधी, डॉ अम्बेडकर, जवाहर लाल, सरदार पटेल, वीर सावरकर, डॉ श्यामा प्रसाद सभी बहुत पढ़े-लिखे एवं बुद्धिमान थे। स्वतंत्रता के लिए किये गये संघर्ष एवं जेल की यातनाओं से उनके व्यक्तित्व में ओज एवं निखार आ गया एवं उनकी नेतृत्व क्षमता अतुलनीय हो गई। आजादी के समय राष्ट्रीय नेतृत्व की जो ओजस्वी तस्वीर थी, वह धीरे-धीरे धुंधली होती गयी। क्योंकि प्रजातांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिज्ञों के लिए किसी भी प्रकार की शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव की अनिवार्यता नहीं रखी। परिणामस्वरूप अनेक लोगों ने परिवारवाद एवं जातिवाद के मार्ग से राजनैतिक नेतृत्व पर कब्जा कर लिया। योग्यता एवं अनुभव के अभाव में उभरते नेतृत्व से राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। देश ने परिवारवाद और जातिवाद से मुक्ति के लिए ही प्रजातंत्र को अपनाया। धरातल पर 80 वर्ष की प्रजातान्त्रिक यात्रा के बाद भी देश अभी इन बीमारियों से मुक्त नहीं हो पाया है। एक ही परिवार ने पीढ़ी दर पीढ़ी वर्षों तक आजाद भारत पर राज किया। 140 वर्ष पुरानी कांग्रेस पार्टी आज भी एक ही परिवार की बपौती है। डॉ मनमोहन सिंह जैसे विद्वान अर्थशास्त्री को 10 वर्ष की लंबी अवधि में भी प्रधानमंत्री पद का अहसास नहीं होने दिया।

प्रो : कैलाश सोडाणी
पूर्व कुलगुरु, वर्धमान
महावीर खुला वि.वि., कोटा

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 12 नवम्बर, 2026

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत–2083, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 2:19 तक, सुकर्मा योग रात्रि 4:26 तक, गर करण सायं 6:10 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:19 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-सिंह, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज राजयोग दिन 2:19 से आरम्भ होगा। आज मंगल सिंह राशि में रात्रि 8:20 पर प्रवेश करेगा। आज से जमादि उलसानि मु.मास 6 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया– चर सूर्योदय से 8:09 तक, चर 10:50 से 12:11 तक, लाभ-अमृत 12:11 से 2:52 तक, शुभ 4:13 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल– 1:30 से 3:00 तक, सूर्योदय 6:48, सूर्यास्त 5:34



मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।



वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आपसी सहयोग वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।



मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।



कर्क
व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



सिंह
शुभ कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकार